गाँधीवाद – वर्तमान संदर्भ में

डॉ० राजू ...
विभागाध्यक्ष- राजनीति वि०
डी.के. कॉलेज, डुमराँव
दिनांक- 18/04/20

———— × ————

महात्मा गाँधी उस महान व्यक्ति का नाम है, जो हिंसा को अहिंसा से, घृणा को प्रेम से और अविश्वास को विश्वास से जीतने में यकीन रखते थे। आज गाँधी जी तो नहीं हैं, लेकिन उनके विचार एवं क्रियात्मक योगदान 21 वीं शताब्दी में भी इतने ही प्रासंगिक हैं, जितने पहले थे। विश्व की वर्तमान स्थिति को देखते हुए उनके विचारों का अक्षरशः अनुसरण करना ही मानवता की जीत है।

महात्मा गाँधी ने जनभावना को महत्व देकर और परम्परागत राष्ट्रवाद को परिष्कृत कर 21 वीं सदी के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया। वैश्विक उथल-पुथल को देखते हुए विभिन्न समुदायों के बीच समन्वय स्थापित कर रचनात्मक कार्य प्रस्तुत किये। उनकी विचारधारा परम्परागत विश्वव्यापीकरण से ऊपर थी। उनका राष्ट्रधर्म वैश्विक था। वे भारतीय संस्कृति से प्रभावित होते हुए वेदों में अभिव्यक्त सम्पूर्ण पृथ्वी के वन्दन में विश्वास करते थे – माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। गाँधी जी ने राष्ट्रवाद को भारतीय चिन्तन के अनुरूप वैश्विक बनाकर संकटग्रस्त विश्व को एक नई दिशा प्रदान किया, जिसका आज अनुकरण विश्व के लिए प्रेरणास्रोत है। इस संकट की घड़ी में विश्व को धैर्य रखते हुए अपने पथ से विचलित नहीं होना है। राष्ट्र की एकजुटता ही राष्ट्रवाद है। धार्मिक कट्टरता आज हमें आणविक आतंकवाद की दहलीज पर पहुँचा चुकी है। ऐसी विषम परिस्थिति में ही स्वामी विवेकानन्द ने 'विश्वधर्म' एवं गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने 'मानव धर्म' की संकल्पना की थी। यदि विज्ञान सार्वभौमिक हो सकता है तो धर्म भी सार्वभौमिक होना चाहिए, क्योंकि किसी भी धर्म को श्रेष्ठ समझने का अर्थ है दूसरे धर्म को हीन समझना। आज के आधुनिक समाज में भी संकुचित साम्प्रदायिक धर्म एवं अन्ध कट्टरता को कैसे स्वीकार किया जा सकता है? धर्म को सिर्फ नैतिकता का पर्याय मानना चाहिए, नैतिकता से बड़ा आज इस संसार में कोई बड़ा हथियार नहीं है। नैतिकता के बल पर ही सारी सृष्टि पर जीत हासिल की जा सकती है।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

वर्तमान संकट की इस घड़ी में सिद्धांत विहीन राजनीति का परित्याग करना ही मानव धर्म है। मैकियावेली की नीति से असहमत होते हुए गाँधीवाद के अन्तर्गत राजनीति में साधन शुद्धि का समावेश कर राजनीति को एक नया आयाम प्रदान किया जाना है। जिस तरह गाँधीजी ने शस्त्र के स्थान पर निःशस्त्र स्थापित कर वीरता का मार्ग प्रशस्त किया ठीक उसी प्रकार विश्वव्यापी 'कोरोना वायरस' की जानलेवा बिमारी पर आत्म विश्वास बनाकर धार्मिक उन्माद को न बढ़ावा देकर प्रकृति की विराट लीला समझना ही सम्पूर्ण मानव जाति के लिए श्रेयष्कर है। गाँधीजी ने स्पष्ट किया है कि जिस अनुपात में साधन का अनुष्ठान होगा, उसी अनुपात में साध्य की प्राप्ति भी होगी। गाँधी जी का समस्त चिन्तन एवं आचरण धर्म एवं राजनीतिक के सिद्धांतों पर आधारित है। नीति शून्य राजनीति सर्वथा त्याज्य है। इसलिए वे छल-कपट, दम्भ और अविश्वास का पोषण करनेवाली राजनीति को धर्म विहीन मानने के कारण नहीं अपनाते। वैश्वीकरण के नाम पर प्रारंभ किये गये आर्थिक सुधारों से गरीबी, मूल्य वृद्धि, बेरोजगारी, विषमता, अपराध, उपभोक्ता संस्कृति इत्यादि में वृद्धि हुई है। सिर्फ लाभ कमाने के लिए बाजार अर्थव्यवस्था में उत्पादन किया जा रहा है और प्रौद्योगिकी के माध्यम से प्रकृति से अन्याय कर रहे है। उन्होंने प्रकृति और मनुष्य के नैसर्गिक संबंधों और स्थायित्व पूर्ण विकास एवं समुचित तकनीक पर जोर दिया। गाँधीवाद में सादगीपूर्ण जीवन शैली, स्वदेशी की भावना और विकेन्द्रीकरण पर बल दिया जिसके माध्यम से २१ वीं सदी के अर्थतन्त्र का विकास किया जा सकता है, न कि मशीनों द्वारा मानवीय श्रम का ह्रास। बेरोजगारी के निराकरण के लिए श्रम को बचाने के स्थान पर अधिक से अधिक श्रम को उत्पादन कार्यों में लगाने का सुझाव दिया, जिसके कारण उन्होंने चरखा, हथकरघा एवं कुटीर ग्रामीण उद्योगों की स्थापना का समर्थन किया, जिससे उद्योगों के

विकेन्द्रीकरण की योजना क्रियान्वित किया जा सके। विद्युत, जहाज-निर्माण, लौह इस्पात एवं भारी मशीनों के कारखानों को ग्रामीण उद्योगों के साथ-साथ खड़ा होते देखना चाहते थे।

गाँधीवाद सामाजिक न्याय का दर्शन है क्योंकि यह सामाजिक समस्याओं के लिए सुविचारित चिन्तन प्रस्तुत करता है। जिससे व्यक्ति की चेतना अधिकाधिक सामाजिक जीवन की ओर अग्रसर हो सके। न्यायमुक्त शोषण विहीन समाज की स्थापना लोकतांत्रिक समाजों का चरम लक्ष्य प्राप्ति की ओर इंगित करता है। न्याय सामाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयास है। गाँधीजी गुण एवं कार्य के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति को अवसर की समानता पर जोर देते थे। इस तरह वे वर्ण-व्यवस्था के माध्यम से सामाजिक न्याय की अवधारणा तक पहुँचते हैं। जाति-प्रथा का विरोध करते हुए सामाजिक न्याय की नींव पर स्वराज्य का भव्य महल खड़ा किये।

सामाजिक चेतना जिसमें पर्दा प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा, देवदासी प्रथा आदि सामाजिक कुरीतियों का घोर विरोध कर सामाजिक न्याय उनके जीवन का लक्ष्य था। जब तक व्यक्ति मानसिक एवं बौद्धिक रूप से जागृत नहीं हो जाता तब तक शोषण विहीन एवं न्यायमुक्त समाज की स्थापना नहीं हो सकती। स्वावलम्बन बुनियादी शिक्षा की सफल एवं समृद्ध कसौटी है जो श्रम एवं ज्ञान में मेल से ही संभव है।

वर्तमान समय मे आर्थिक विकास की ही सिर्फ सोच को सामाजिक विकास का केन्द्र मान कर बैठे हैं और सभ्यता के बाहरी कलेवर पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। वैज्ञानिक क्षेत्र मे हमारी प्रगति दिशानुकूल एवं दिग्भ्रमित साबित हो रहा है। हम अपने कर्तव्य से विमुख हो रहे है और हमारे चारों ओर अनैतिकता रूपी दानव का समावेश होने से हम दल-दल मे फँसते नजर आ रहे है। अतः हमें भोग को नहीं त्याग को

अधिकार के साथ - साथ अपने नैतिक कर्तव्य को, साम्राज्य को नहीं स्वराज्य को महत्व देकर ही इंसान रूपी जिन्दगी को जीवन देकर समाज का पथ प्रदर्शक बन सकते हैं। निश्चित तौर पर समाज के प्रत्येक समुदाय को साथ लेकर चलने से ही सर्वव्यापि समभाव की कल्पना सार्थक सिद्ध हो सकता है, क्योंकि जहाँ चाह है, वहीं जीवन रूपी प्रेरणादायक राह है।

जिस तरह आतंकवाद प्रभावित विश्व को मुक्त करने में गाँधीजी के विचार प्रासंगिक है। जब तक अभाव, शोषण एवं विषमता रहेगी, हिंसा एवं अपराध को समाप्त करना संभव नहीं है। आज हमारे संस्कार हिंसक एवं विकृत होते जा रहे हैं। इसका परिस्कार शिक्षा व्यवस्था से ही संभव है। आज आवश्यकता है शांति बोध एवं अहिंसात्मक विज्ञानको गति देने की। आज की 21वीं शताब्दी में विश्वशांति नैतिकता, आध्यात्मिकता एवं मानवता पर जोर देकर न्याय युक्त समाज की स्थापना करना ही गाँधीवाद है। स्पष्टतया आज विश्व समुदाय को विभिन्न देशों में जितनी तीव्र गति से विकारों की तीव्रता का प्रवेश हो रहा है, मानवता उतना ही उन्मूलित हो रही है। और भौतिकवादी दृष्टिकोण हमें अत्यधिक प्रभावित कर रहे हैं, गाँधीवाद उतना ही अधिक वर्तमान समय में प्रासंगिक होता जा रहा है, जो विश्व समुदाय के लिए अनुकरणीय है। कहा गया है कि :-

"अपना क्या है इस जीवन में, सब कुछ लिया उधार।
सारा लोहा उन लोगों का, अपनी केवल धार॥"

(समाप्त)